

18. सिकन्दर की महात्वाकांक्षा

सिकन्दर महान् विश्व विजय की महात्वाकांक्षा से आस-पास के देशों को जीतने में लगा हुआ था। उसने अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, बैबीलोनिया, फारस आदि देश अपने अधीन कर लिए थे। लगातार विजयों से सिकन्दर को अंहकार हो गया था। वह अपार-धन एकत्र करने में लगा हुआ था। धन की तुलना में मनुष्य का जीवन उसकी दृष्टि में कुछ न था।

सिकन्दर ने भारत की समृद्धि की कहानियां सुनीं थी। अपनी शक्ति के मद में अब उसने भारत पर आक्रमण कर दिया। भारत में प्रवेश करने पर सिकन्दर को सीमा प्रदेश के राजाओं से लोहा लेना पड़ा, पर उसकी विशाल सेना के सामने टिकने का सामर्थ्य उन छोटे-छोटे राज्यों में कहाँ था ? सिकन्दर एक-एक राज्य को परास्त करके आगे बढ़ने लगा। अब जिस राजा से उसका मुकाबला, था वह बहुत बुद्धिमान था। वह जानता था कि सिकन्दर की फौजों का सामना करने की शक्ति उसमें नहीं है। अतः उसने चतुराई की एक चाल चली।

वह सीधा सिकन्दर के पास गया। सिकन्दर ने उसका उचित सत्कार किया। राजा ने उससे कहा—“आप महान् हैं, मैं आपके साथ संधि करने को प्रस्तुत हूँ।”

सिकन्दर ने राजा की बात स्वीकार कर ली। राजा ने पुनः निवेदन किया—“आप कृपापूर्वक अपने मुख्य अमात्यों के साथ मेरे यहां भोजन करने के लिए पधारें।” सिकन्दर ने निमन्त्रण स्वीकार किया।

राजा ने सिकन्दर के स्वागत की बहुत ही तैयारी की।

सिकन्दर अपनी पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था के साथ मुख्य अमात्यों सहित राजमहल में पहुँचा। राजा ने उसको एक भव्य आसन पर बैठाया। वह राजा के स्वागत से बहुत प्रभावित हुआ।

सामने भोजन की सब तैयारी थी। सुन्दर आसन लगे थे और उनके सामने चांदी की चौकियों पर स्वर्ण के थाल सजे हुए थे तथा वे कीमती रेशमी वस्त्र से ढके थे।

राजा ने प्रार्थना की और सिकन्दर अपने साथियों सहित भोजन के लिए निर्धारित आसन पर बैठ गया। राजा भी उसके समीप बैठा। सबसे पहले सिकन्दर ने थाल पर से वस्त्र उठाया। उसके आश्चर्य का पार न रहा। थाल में भोजन के स्थान पर उत्तम जाति के हीरे, पन्ने, माणिक, मोती आदि रखे हुए थे। ज्यों ही उसने इन वस्तुओं को देखा, वह आश्चर्य में डूब गया। उसने राजा से प्रश्न किया—“यह क्या मजाक है ?”

राजा ने बड़ी ही विनम्रता के साथ गंभीर स्वर में निवेदन किया—“महाराज! यह मजाक नहीं है, आपकी भूख के अनुरूप ही यह भोजन परोसा गया है। पेट तो अन्न से भरता, है उसकी कमी तो आपके देश मैसिडोनिया में भी नहीं थी, किन्तु आपकी भूख तो हीरा, पन्ना, माणिक, स्वर्ण आदि की है। इसीलिए आप एक देश के बाद दूसरे देश पर आक्रमण करते जा रहे हैं

और हज़ारों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार रहे हैं। इतना ही नहीं निरपराध देशों की जनता के शान्त और स्थिर जीवन को अशान्त और अस्थिर बना रहे हैं।”

सिकन्दर शान्तचित होकर राजा के एक-एक शब्द को ध्यानपूर्वक सुन रहा था। राजा के शब्दों ने उसके हृदय को स्पर्श किया। उसके मन में अपने कृत्यों के प्रति ग्लानि उत्पन्न हुई। उसने निश्चय किया अब आगे नहीं बढ़ना है, वह अपने देश को लौट गया।

काश! सिकन्दर का यह निश्चय स्थिर रह पाता!

‘कल्याण’- भाग 48 से साभार

* अभ्यास *

1. सिकन्दर के अहंकार का क्या कारण था ?
2. सिकन्दर को राजा ने माणिक-मोती परोस कर क्या कहना चाहा ?
3. राजा ने किन शब्दों में सिकन्दर की प्रताड़ना की ?
4. सिकन्दर पर भारतीय राजा के आचरण का क्या प्रभाव पड़ा ?

